गाँधी की बुनियादी शिक्षा योजना : वर्तमान में प्रासंगिकता एवं सम्भावनाएँ

डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

महात्मा गाँधी एक युग पुरुष थे। आज भी वैश्विक स्तर पर गाँधी के सत्य, अहिंसा व नैतिक मूल्यों का प्रयोग किया जा रहा है। इसी कड़ी में गाँधी की बुनियादी शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का साधन मानो जा सकतो ह। शिक्षा व्यक्ति को सभी समस्याओं को पहचान कर उनका समाधान निकालन का मार्ग प्रशस्त करती है। गाँधी की शिक्षा सामाजिक समानता, आर्थिक अवसरों की उपलब्धता, नैतिक व मानवीय मूल्यों का समर्थन करती है।

गाँधी की बुनियादी शिक्षा 3H (Head, Hand, Heart) पर आधारित थी। इसमें स्वावलम्बन और जीविकोपार्जन के साथ–साथ चरित्र निर्माण की व्यवस्था थी। गाँधी का आदर्श सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् शिक्षा ही हमें समस्त बन्धनों से मक्ति दिलाती है। गाँधी की शिक्षा संकल्पना अक्षर ज्ञान तक सीमित ना होकर व्यक्तित्व निर्माण का साधन / हथियार मानी जाती है।

भारत में वर्तमान में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति तथा हॉल ही में जारी नई शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि आज के परिवेश में गाँधी की शिक्षा व्यवस्था कितनी कारगर है।

महात्मा गाँधी के प्रत्येक क्षेत्र व विषय में विचार एवं साधन बहुत ही व्यवहारिक एवं मानवीय गणा का समन्वय हैं। शिक्षा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। आदिकाल से ही शिक्षित व्यक्ति का समाज व राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देखा जाता है।

गांधी के अनुसार शिक्षा की योजना में हाथ में कलम से पहले औजार होना आवश्यक है। गाधो का मानना ह कि तालीम बेसिक व स्वाभाविक होगी जो बच्चों पर लादी नहीं जाएगी बल्कि वे स्वतः ही दिलचस्पी लें। इसीलिये यह तालीम दूसरी तमाम शिक्षा पद्धतियों से जल्दी फल देने वाली और सस्ती होगी।[1] इस प्रकार गाँधी का मानना है कि शिक्षा की संकल्पना में व्यक्ति के शरीर, मन व आत्मा की उत्तम क्षमताओं को उद्घाटित कर प्रकाश में लाया जाये। शिक्षा से मेरा अभिप्राय है– ''बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोच्च गुणों का चहुँमुखी विकास।''[2]

गांधी ने समय–समय पर अपने लेखों व भाषणों के द्वारा शिक्षा सम्बनी विचार प्रकट किये। शिक्षा का बहुआयामी स्वरूप प्रस्तुत किया। शिक्षा को व्यक्ति के व्यक्तित्व व कृतित्व का मूल आधार माना। साथ हो शिक्षा को राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक व आर्थिक प्रगति का आधारभूत तत्व भी माना। गांधी के अनुसार साक्षरता शिक्षा नहीं है, स्वावलम्बन शिक्षा है। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है। शिक्षा मातृभाषा में हो, सात वर्ष तक निःशुल्क हो तथा रोजगारपरक हो। गांधी के अनुसार परिर्वन एवं प्रयोग होते रहने चाहिये।

गांधी जी कहा करते थे कि ''मैं भारत के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के सिद्धान्त में दृढ़तापूर्वक विश्वास रखता हूँ।[3] गांधी की शिक्षा में आदर्श नागरिक व समाज के निर्माण की भावना थी। समाज म शोषण का स्थान नहीं हो। गांधी के अनुसार अंगेजी शिक्षा से दम्भ, राग और द्वेष बढ़े है।[4] अतः गांधी पाश्चात् शिक्षा व भाषा के समर्थक नहीं थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा व शिक्षा से भारतीयों का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता अतः भारतीय ज्ञान व भाषा का प्रयोग आवश्यक है।

भारत में बड़े–बड़े कार्यालयों में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है ऐसे में भारतीय नागरिक से न्याय कैसे होगा ? इसलिए प्रांतीय भाषाओं की सत्ता कायम करनी

चाहिए। उनके अनुसार मातृभाषा मनुष्य के मानसिक विकास के लिए उतनी ही आवश्यक है जिस प्रकार माँ का दूध शिशु के मानसिक विकास के लिए है।

अतः हिन्दुस्तान के निवासियों को अपनी भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। प्रत्येक पढ़े–लिखे व्यक्ति को भी अपनी भाषा व संस्कृति का ज्ञान होना चाहिये। हिन्दू को संस्कृत, मुस्लिम को अरबी, पारसी को फारसी भाषा तथा सभी को हिंदी भाषा का ज्ञान होना चाहिए। हिंदी भाषा को उर्दू या नागरी लिपि में लिखने की छूट होनी चाहिए जिससे कि हिन्दू–मुस्लिम आपस में सद्भाव व समन्वय से अपने सम्बन्ध बनाये रखें।[5]

गांधी के अनुसार हमें पश्चिमी सभ्यता का अधिक प्रभाव नहीं होने देना चाहिये। इंग्लण्ड में ही अंग्रेजी भाषा के बजाय स्थानीय भाषा के प्रयोग का प्रचलन चल रहा है। वेल्स परगने के बालक स्थानीय वेल्स भाषा का प्रयोग करें ऐसा प्रयास किया जा रहा है। दूसरी और हम अंग्रेजी भाषा को अपनी शानओं–शौकत मानने में लगे हैं जो हमारी मौलिक सभ्यता व संस्कृति के लिए घातक सिद्ध हो रही है। भारतीय मानस का अधिकतम विकास अंग्रेजी के ज्ञान के बिना सम्भव होना चाहिये।[6] गांधी के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा में हमें कमजोर बना दिया। साहसी नागरिक का निर्माण अंग्रेजी शिक्षा नहीं कर सकती।[7] गांधी के अनुसार श्रम की शिक्षा आवश्यक रूप से देनी चाहिए। पारम्भ से ही श्रम का महत्व समझाया जायेगा तो व्यक्ति अपने पारिवारिक एवं परम्परागत पेशे कृषि व मजदूरी व शिल्प आदि से दूर नहीं जा पायेगा।[8]

गांधी का मानना है कि शिल्प, कला, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि को एक योजना में समन्वित कर एक उपयोगी तालीम की व्यवस्था करनी चाहिये। शिल्प और उद्योग को शिक्षा से अलग न मानकर शिक्षा का ही अंग मानना चाहिये।[9] इस प्रकार आपसी सहयोग व स्वाभिमान की शिक्षा प्राप्त करें, सामुदायिक जीवन पद्धति का अनुसरण करें।

स्त्रियों को पुरुषों के बराबर शिक्षा के साथ–साथ यदि कहीं आवश्यकता हो तो उन्हें विशेष सुविधा भी दी जाए। गांधी जी स्त्रियों को भी शिक्षा में अग्रणी होने की वकालात करते थे। धार्मिक शिक्षा के सन्दर्भ में सभी धर्मों के सिद्धान्तों एवं शिक्षाओं का अध्ययन करने के पक्षधर थे। विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिये कि संसार के विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों का आदर तथा उदारतापूर्ण सहनशीलता की भावना के साथ उनका आदर व सम्मान करने की आदत डाले।[10] सत्य, अहिंसा, न्याय व भाईचारे के महत्व में विश्वास ही सच्चा धर्म होता है, ऐसी अवधारणा आम व्यक्ति के मन और मस्तिष्क मे विकसित करना गांधी की धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य दृष्टिगत है। गांधी सभी धर्मों के नेक सिद्धान्तों को मानवीय विकास के लिए लाभदायक मानते हैं तथा आदर्श व्यक्तित्व, समाज के निर्माण में उनका उपयोग बेहतर किया जाना चाहिये। धार्मिक शिक्षा चाहे स्कूली शिक्षा का हिस्सा ना हो, परन्तु एक प्रौढ़ को अन्य विषयों के साथ–साथ धार्मिक विषयों पर भी अध्ययन व स्वावलम्बन की आदत डालनी चाहिये।[11]

गाधो धामिक शिक्षा धम म पाखण्ड व अधविश्वास का समथन नहो करत ह। व एसो पाचोन परम्पराआ, मान्यताआ का समथन करत ह जा नोतिगत सत्य पर आधारित आध्यात्मिक विकास का माग पशस्त करतो हा। आत्मा का पतन व बद्धि का स्खलन नहो करतो हा। एस धम–कम, विधि–विधान एव सनातन शास्त्र, अनमादित आध्यात्मिक गणा क पबल समथक थ।[12]

गाँधी जी का मानना था कि निरक्षर लोगों को साक्षर करना चाहिये परन्तु सिर्फ अक्षर ज्ञान ही नहीं अपितु उन्हें रोजमर्रा की जिन्दगी में काम आने वाली शिक्षा भी देनी चाहिये। प्रौढ़ शिक्षा का समर्थन भी गाँधी ने किया। उन्हें सच्ची शिक्षा होगी सीधी बातचीत के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा। जबानी तालम के साथ–साथ लिखने–पढ़ने की तालीम भी चलेगी।[13]

गाँधी ने अपने समय की शिक्षण पद्धति को दोषपूर्ण बताया तथा उसमें बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार बालक और शिक्षक के बीच

की खाई समाप्त हो। उन्होंने कार्य–प्रधान शिक्षण–पद्धति को अपनाने की जरूरत बतायी। उनके अनुसार विद्यार्थी को निरिक्षणकर्ता एवं प्रयोगकर्ता होना चाहिये। शिक्षण पद्धति के प्रयोगात्मक ढाँचे को विकसित कर उपयोग में लाने पर जोर दिया।

भारत में वर्तमान में मैकाले पद्धति आधारित शिक्षा व्यवस्था संचालित है। पाचोनकाल म गुरुकुल शिक्षा पद्धति का प्रचलन था। तुलनात्मक दृष्टि से गांधी की शिक्षा की संकल्पना अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था की बजाय गुरुकुल शिक्षा पद्धति का समर्थन करती नजर आती है। गांधी के अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को बाबू बनाने वाली शिक्षा कहा है। अंग्रेजी शिक्षा भारतीय मूल भी संस्कृति व संस्कारों का पोषण नहीं करके उन्हें नष्ट करने के मार्ग खोलती है। वह भारतीय समाज में विभाजन व शोषणकारी तत्वों को समाहित करती है तथा अंग्रेजी को श्रेष्ठ बताने व बनाने वाली है।

गुरुल शिक्षा पद्धति में व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक चारित्रिक उन्नयन के लिए पाठ्यक्रम व शिक्षा होती थी। गांधी भी कहते हैं कि भारतीय लोगों को नैतिक बल, रचनात्मक, आर्थिक उत्पादन, सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण करने वाली शिक्षा दी जाए। इससे मानवीय गुणों का निर्माण व विकास होगा तथा साथ ही आदर्श समाज व राष्ट्र का निर्माण भी होगा। सामाजिक–आर्थिक समानता आधारित शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा सैद्धान्तिक होने की बजाय व्यावसायिक व परिश्रम पर आाारित हो जो गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था में दिखाई देती है।

मैकाले स्मरण पत्र पर आधारित शिक्षा प्रणाली भारतीयों को प्रवृत्ति, विचार, नैतिकता एवं संस्कारों से अंग्रेजी बनाने वाली दिखाई देती है। लार्ड बैंटिक ने मैकाले स्मरण पत्र को मार्च, 1835 में स्वीकार करके अंग्रेजी भाषा को प्रशासन व उच्च शिक्षा का आधार माना। इसी वर्ष राजभाषा फारसी के स्थान पर अंग्रेजी बन गई। यह शिक्षा व्यवस्था आज तक जारी है जो कई मायनों में अप्रासंगिक दिखाई देती है।

1854 ई. में वुड्स डिस्पैच लागू किया गया जिसे भारतीय शिक्षा का 'मैग्नाकार्टा' कहा जाता है। इसके तहत् कुछ बदलाव करते हुए स्थानीय / देशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की छूट दी गई। ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक पाठशालाएँ तथा निजी क्षेत्र में शिक्षा के प्रोत्साहन की व्यवस्था की गई। भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। व्यावसायिक एवं तकनीकि शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र व बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की व्यवस्था की गइ।

परन्तु वर्तमान में बदलते परिवेश में परिवर्तन की गुंजाइश दिखाई देती है। आजादी के पश्चात् विभिन्न शिक्षा आयोग गठित कर कुछ परिवर्तन किए गए। परन्तु गांधी की शिक्षा की संकल्पना का सपना पूरा होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा। हाल ही में भारत में नई शिक्षा नीति 2020 का प्रस्ताव पारित किया गया है। इसमें शिक्षा का बजट बढ़ाकर जी. डी. पी. का 6 प्रतिशत कर दिया गया। इसमें रोजगार परक, गुणवत्तायुक्त, स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित करके शिक्षा दने के प्रावधान किये गए है। गाधो ने देशी भाषाओं के प्रचार–प्रसार व उपयोग कर बल दिया था, नई शिक्षा नीति में भी स्थानीय भाषा, प्राचीन भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की सम्भावनाएँ देखी जा सकती है।

21वीं सदी की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए नई शिक्षा नीति में बहु–विषयक, बहु–वैकल्पिक, श्रम, कौशल व शिल्प पर आधारित शिक्षा प्रणाली का रोड मैप बनाया गया है। इसमें कला, खेल, योग, संवाद, कहानियाँ, परम्परागत कौशल आदि को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। देश की मौलिक, आदिवासी संस्कृति, वन संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, कृषि के परम्परागत तार–तरीके आदि भी अध्ययन व अनुसंधान के विषय होंगे। इन सबके लिए आधारभूत सुविधाएँ, मैकेनिज्म आदि बड़ी चुनौतियाँ हो सकती है। परिवर्तन को स्वीकार करना, उसके लिए सुविधाएँ प्रदान करना भी भारतीय परिवेश में एक चुनौती है।

पूर्व में भी शिक्षा में परिवर्तन के लिए 1964 में संसद सदस्य श्री सिद्धेश्वर प्रसाद ने शिक्षा के दर्शन और दृष्टिकोण को लेकर प्रश्न उठाये थे। इसी आधार पर तत्कालीन यू.जी.सी. चेयरमैन कोठारी के नेतृत्व में 17 सदस्यीय शिक्षा आयोग बना था। उसने शिक्षा पद्धति का नया तरीका इजाद किया जिसे 1968 ई. में संसद में मंजूर किया गया जो प्रथम शिक्षा नीति के रूप में जाना जाता है। 1986 ई. में दूसरी शिक्षा नीति तथा 1992 ई. में उसकी पुर्नसमीक्षा की गई।

इनमें अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का आंशिक रूप से बदला गया परन्तु फिर भी भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा प्रणाली की स्थाना नहीं हुई। अधिकांश भारतीय आम नागरिक का जीवन जीते है। उनके हितों, आय के ससाधना को ध्यान में रखकर शिक्षा के पाठ्यक्रम, डिप्लोमा, डिग्री, शिक्षण, प्रशिक्षण की व्यवस्था अधिक प्रासंगिक होगी।

नई शिक्षा नीति में परिवतन क प्रयास तो किया गया है लेकिन इसे लाग करने की चुनौती म़ख्य है। क्या वर्तमान शैक्षणिक संस्थानों, संसाधनों आदि में यह सम्भव है ? क्या गाँधी की शिक्षा संकल्पना का सपना पूरा हो सकता है ? क्या वर्तमान परिदृश्य में वैश्विक स्तर पर यह कारगार सिद्ध हो सकती है ? ऐसे अनेक प्रश्न विचारणीय है।

भारतन कुमारप्पा द्वारा सम्पादित पुस्तक बेसिक ऐजुकेशन (1951 ई.) एवं टुआर्डस न्यू ऐजुकेशन (1953) में गांधी के शिक्षा दर्शन का विस्तृत उल्लेख मिलता है जो उनको पत्रों, लेखों व भाषणों से संकलित किया गया है। इसमें गांधी व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक बनाने वाली शिक्षा का समर्थन करते हैं। उन्होंने काम और ज्ञान को एक–दूसरे से अलग न मानकर एक–दूसरे से अर्न्तसम्बन्ध रखने वाला बताया है।

प्रारम्भिक तौर पर बच्चों को मजबूत, उपयोगी व विश्वास से लवरेज बनाने हेतु शिक्षा मे स्वच्छता, पोषक तत्व, संगीतमय वातावरण आदि तत्वों का समावेश

कारगर बताया है। साथ ही स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा की बात भी की जाती है। भारतीय वातावरण के अनुसार बालक को शिक्षा दी जानी चाहिये। महंगी शिक्षा से तुरंत वापस कुछ लाभ नहीं होता अतः कताई–बुनाई को भी पाठ्यक्रम से जोड़ना चाहिये।[14] शिक्षा में सेवा भाव का होना, चारों तरफ के वातावरण की अनुभूति, आत्मनिर्भर अनुशासित एवं स्वावलम्बी आदि गुणों का विकास करने वाली शिक्षा बालकों को दी जानी चाहिए।

यदि शिक्षा के पाठ्यक्रम में शिल्प व श्रम को जोड़ा जाए तो बालक स्वयं अपना खर्चा वहन करते हुए आत्मनिर्भर बनता है। मानसिक व शारीरिक रूप से प्रशिक्षत होगा तथा स्वदेशी की संकल्पना को पूरी करने में सहयोगी बनेगा। इस प्रकार एकीकृत शिक्षा जिसके पाठ्यक्रम में बालक को व्यावहारिक शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा श्रम आधारित शिक्षा, संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान की जाए तो ज्यादा उपयोगी होगी।[15]

नई शिक्षा नीति 2020 में डॉ. कस्तूरी रंजन का मानना है कि कक्षा 6 से ही बालक को व्यावसायिक व कौशल विकास की, शिक्षा दी जानी चाहिये। यह कही ना कहीं गांधी जी की शिक्षा की संकल्पना का समर्थन दिखाई देता है परन्तु क्या व्यावहारिक तौर पर इसे अमली जामा पहनाया जा सकेगा।

गांधी की शिक्षा की संकल्पना पूरी तरह आत्मनिर्भर व स्वावलम्बन के तत्वों का समावेश है। गांधी की शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, सामाजिक संस्कारों का विकास, आर्थिक स्वावलम्बन, स्वभाषा राष्ट्रीय दृष्टिकोण पर आधारित बेसिक शिक्षा की संकल्पना है।

भारत में अभो संचालित शिक्षा अंग्रेजी पद्धति पर है जो वैश्विक स्तर पर कुछ उपयोगी भी दिखाई देती है परन्तु भारत के भौगोलिक, सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप कुछ परिवर्तना की गुंजाइश भी दृष्टिगत है। भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 के तहत् बड़े परिवर्तन का खाकर तैयार किया है।

सरकार व आम नागरिक मिलकर कुछ उपयोगी बदलावों को मूर्त रूप दे पाते हैं तो कुछ अच्छे परिणाम मिलन की उम्मीद है। गांधी के सपनों का भारत बनाने में हम सभी को अपना योगदान देना होगा। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को रोजगार के अवसर, समानता व स्वतंत्रता की भावना का आभास कराना होगा।

आज के दौर में विविध समस्याओं के अनेक रूप हमारे सामने खड़े हुए है जैसे पर्यावरण संकट, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भुखमरी, सामाजिक एवं आर्थिक असमानता आदि–आदि। गाँधी की बेसिक शिक्षा इन मुख्य चनातिया क समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है। नई शिक्षा नीति में कुछ प्रयास इस तरह के दिखाई देते हैं लेकिन उनका क्रियान्वयन किस रूप में होता है यह एक प्रश्न हमारे सामने हैं। नइ शिक्षा नोति न गाधो को बसिक शिक्षा का आर अधिक पासगिक बना दिया तथा नइ–नइ सम्भावनाआ का माग खाल दिया।

संदर्भ

1 हरिजन, 28 अगस्त, 1937
2 हरिजन, 31 जुलाई, 1937
3 हरिजन, 9 अक्टूबर, 1937
4 गांधी जी, अनुवादक अमृतलाल ठाकरदास, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1941, पृ. 73
5 वही, पृ. 74
6 यंग इण्डिया, 2 फरवरी, 1921
7 आर. के. प्रभु तथा यू. आर. राव, महात्मा गांधी के विचा, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 1994, पृ. 363–364
8 यंग इण्डिया, 1 सितम्बर, 1921
9 हरिजन, 10 नवम्बर, 1964
10 यंग इण्डिया, 6 दिसम्बर, 1928
11 हिंदी नवजीवन, 25 अगस्त, 1926
12 मर सपना का भारत, माहत्मा गाधो, राजपाल एड सन्स, दिल्लो, 2010, प. 177
13 रचनात्मक कार्यक्रम, पृ. 30–31
14 भारतन कुमारप्पा, सम्पादित टुर्आड्स न्यू एजुकेशन, पृ. 29–30
15 यंग इण्डिया, 15 जून, 1921

गाँधी की बुनियादी शिक्षा योजना : वर्तमान में प्रासंगिकता एवं सम्भावनाएँ

डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

शोध सारांश

महात्मा गाँधी एक प्रयोगकर्ता के रूप में मानव कल्याण की भावना से ओत–प्रोत आदर्श पुरुष थे। उनके कार्यों एवं विचारों के लक्ष्य समाज व मानव का उत्थान, अन्याय व शोषण की खिलाफत, अवसरों की समान उपलब्धता, हर व्यक्ति को स्वावलम्बन के साथ विकास करने का अधिकार आदि दृष्टिगोचर हैं। गांधी की शिक्षा साक्षर बनाने वाली न होकर एक आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का संकल्प थी। उनके लेखों एवं भाषणों से स्पष्ट होता है कि अक्षर ज्ञान से पहले औजार चलाना सीखे अर्थात् परिश्रम आधारित रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था का समर्थन करते थे। स्वावलम्बन का विकास ही स्वास्थ्य एवं समृद्ध व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। जिससे समाज व राष्ट्र का आदर्श रूप तैयार किया जा सकता है। अतः गाँधी जी प्रत्येक व्यक्ति को स्थानीय वातावरण एवं जरूरतों के अनुसार काम उपलब्ध कराने की शिक्षा पद्धति को बढ़ावा देना चाहते थे। गाँधी की शिक्षा योजना मूलतः परिश्रम, रोजगार, बौद्धिक कुशलता, आध्यात्मिकता एवं नैतिकता जैसे आयामों का मिश्रण थी।

संकेताक्षर : बुनियादी शिक्षा, स्वावलम्बन, शिल्प–कला, अक्षर ज्ञान, गुरुकुल पद्धति, शिक्षा आयोग, नई शिक्षा नीति, शैक्षणिक संस्थान, पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय शिक्षा, पाश्चात् शिक्षा।